आइन-ए-अकबरी – कृषि संबंध    L-5    Section-B

Objective Question

Q) अकबर ने अबुल फजल से अपने स्वयं के इतिहास लिखने को कहा। प्राचीनकाल मे ऐसी परंपरा कहाँ थी?
Ans) चीन

Q) 'अकबरनामा' एवं 'आइन-ए-अकबरी' के अनुवादक निम्न मे से कौन थे?
a) बेवरीज b) जैरेट c) ब्लाकमैन d) सभी ✓

Q) तम्बाकू का सेवन सबसे पहले किस मुगल सम्राट ने किया था?
Ans) अकबर

Q) किस ग्रंथ में आदम से लेकर अकबर के काल तक का इतिहास मिलता है?
Ans) अकबरनामा

Q) शिकार के समय रास्ते में पड़ने वाले गाँवों में भू-राजस्व संबंधी जानकारी किस सम्राट ने सर्वप्रथम प्राप्त की?
Ans) अकबर

Q) तम्बाकू पर किस शासक ने सर्वप्रथम प्रतिबंध लगाया,
Ans) जहाँगीर

Scanned with CamScanner

Q) भारत में तम्बाकु का पौधा लाया गया?
Ans) पुर्तगालो द्वारा पुर्तगाल से

Q) आइन-ए-अकबरी के अनुसार भूमि को कितने भागो मे बाँटा जाता था?
Ans) चार भागो में → पोलज, परौती, चच्चर, बंजर

Q) सन् 1600-1700 ई० के बीच भारत की आबादी लगभग बढ़ी थी।
Ans) 5.000000

Q) कुतुबमिनार का ~~आर~~ निर्माण किसने आरम्भ किया था?
Ans) कुतुबुद्दीन ऐबक

Q) अकबर का वित्त मंत्री कौन था?
Ans) टोडरमल

Q) आइन-ए-अकबरी कितने भागो मे विभक्त है?
Ans) पाँच भागो मे।

**प्रश्न 1. "'आइन-ए-अकबरी' अपने काल का आइना है।" व्याख्या करें।**

**अथवा** (*Or*)

**आइन-ए-अकबरी हमारे लिए मुगल साम्राज्य के बारे में सूचनाओं का भण्डार है। व्याख्या कीजिए।**(*U.S.E.B.*, 2013)

**उत्तर**—आइन-ए-अकबरी अबुल फजल के द्वारा लिखा गया था। यह पुस्तक तीन भागों में लिखी गई थी। अकबर के शासन काल का सकारात्मक पक्ष पेश करना इस ग्रंथ का मुख्य उद्देश्य था। यह एक ऐसा काल था जिसमें एक मज़बूत सत्ताधारी वर्ग सामाजिक मेल-जोल बनाकर रखता था।

आइन-ए-अकबरी अपने काल के इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत है। आइन-ए-अकबरी उस काल के जीवन के सभी पक्षों का एक क्रमिक वर्णन प्रस्तुत करता है—

(i) यह एक ऐतिहासिक ग्रंथ है। यह मुगल काल की बारीकियों से अवगत कराता है।

(ii) यह ग्रंथ किसानों का विस्तृत वर्णन करता है क्योंकि किसान अपने बारे में स्वयं नहीं लिखते थे।

(iii) 'आइन' उस समय लिखे गये कम्पनी के दस्तावेजों को समझने में भी सहायता करता है।

(iv) 'आइन' राजधानी के अतिरिक्त दूर-दराज के क्षेत्रों का भी विवरण प्रस्तुत करता है।

**प्रश्न 2. कृषि उत्पादन में महिलाओं की भूमिका का विवरण दीजिए।** (*Raj. Board*, 2016; *J.A.C.*, 2016)

**उत्तर—कृषि समाज में महिलाओं की भूमिका—**

(i) मर्द और महिलाएँ खास किस्म की उत्पादन की प्रक्रिया में भूमिकाएँ अदा करते हैं।

(ii) खेतों में महिलाएँ और मर्द कन्धे से कन्धा मिलाकर काम करते थे। मर्द खेत जोतते थे एवं हल चलाते थे और महिलाएँ बुआई, निराई और कटाई के साथ-साथ पकी हुई फसल का दाना निकालने का काम करती थीं।

(iii) पश्चिम भारत में हल या कुम्हार का चाक छूने की रजस्वला महिलाओं को इजाजत नहीं थी, इसी तरह बंगाल में महिलाएँ अपने मासिक धर्म के समय पान के बागान में नहीं घुस सकती थीं।

(iv) सूत कातने, बर्तन बनाने के लिए मिट्टी को साफ करने और गूँथने और कपड़ों पर कढ़ाई जैसे दस्तकारी के काम उत्पादन के ऐसे पहलू थे, जो महिलाओं के श्रम पर निर्भर थे।

(v) किसी वस्तु का जितना वाणिज्यीकरण होता था, महिलाओं के श्रम की उसके उत्पादन के लिए उतनी ही माँग होती थी। जरूरत पड़ने पर किसान और दस्तकार महिलाएँ न सिर्फ खेतों में काम करती थीं बल्कि नियोक्ताओं के घरों पर भी जाती थीं और बाजारों में भी।

(vi) महिलाएँ (विधवा महिलाएँ भी) पुश्तैनी सम्पत्ति के विक्रेता के रूप में ग्रामीण जमीन के बाजार में सक्रिय हिस्सेदारी रखती थीं।

(vii) हिन्दू और मुसलमान महिलाओं को जमींदारी उत्तराधिकार में मिलती थी जिसे बेचने व गिरवी रखने के लिए उन्हें स्वतंत्रता प्राप्त थी। बंगाल में महिला जमींदार भी पाई जाती थीं। अठारहवीं सदी की सबसे बड़ी और मशहूर जमींदारियों में से एक थी राजशाही की जमींदारी जिसकी कर्ता-धर्ता एक स्त्री थी।

Scanned with CamScanner